International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 3; Issue 9; September 2017; Page No. 80-83

रामसेतु की प्रामाणिकता

योगेन्द्र सिंह
पीएच.डी. शोधार्थी, भारतीय इतिहास एवं सस्कृति विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत।

प्रस्तावना

रामसेतु की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए इस पर विचार करना होगा कि भारत एवं श्री लंका के मध्य समुद्र में स्थित सम्पर्क मार्ग का नाम रामसेतु कैसे हुआ एवं इसका वैज्ञानिक पक्ष क्या है? इसके वैज्ञानिक पक्ष को जानने के लिए प्राचीनकालीन समुद्र की स्थिति, इसके मानव–निर्मित होने का प्रमाण, तत्कालीन सेतु–निर्माण–कला, सेतु की माप आदि पर विचार करते हुए इस प्रश्न का उत्तर भी खोजना होगा कि आखिर समुद्र पार करने के लिए वानर–सेना ने नाव आदि का प्रयोग क्यों नहीं किया। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर ही इसकी प्रामाणिकता को सिद्ध करना उपयुक्त होगा।

रामसेतु का नामकरण

'रामसेतु' अर्थात 'राम का सेतु' शब्द विभिन्न अर्थो के लिए प्रयोग में लाया जाता है। सेतु शब्द का अधिकांषतः प्रयोग पुल, 'बॉध' आदि के अर्थ मे किया जाता है। सेतु शब्द के साथ 'बन्ध' का प्रयोग करने से 'सेतुबन्ध' शब्द निर्मित होता है। इसका अर्थ है पुल का निर्माण। किन्तु यह शब्द मुख्यतः उस शैल–श्रृंखला के लिए प्रयोग किया जाता है जो कारोमण्डल समुद्र–तट की दक्षिणी सीमा से श्रीलंका तक फैली हुई है तथा जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसका निर्माण राम ने करवाया था। सेतु से ही 'कन्'प्रत्यय करने पर 'सेतुकः' शब्द निर्मित होता है। इसका अर्थ पुल भी होता है।[1] ऋग्वेद में सेतु शब्द से निर्मित सेतवः शब्द का प्रयोग हुआ है। ''पदे–पदे पासीन सन्ति सेतवः।[2] जिसका अर्थ सीमाओं को बॉधने वाले सेतु सर्वत्र उपलब्ध होते है। यही पर ''मा नः सेतु' सिषेदय''[3] अर्थात यह सेतु (बॉध) हम सबको आपस में जोडे। इसी प्रकार अथर्ववेद[4] मे भी सेतु शब्द का प्रयोग उपलब्ध होता है।

रामायण के अनुसार जब जल ने भारत के दक्षिणी समुद्र–तट से लंका तक सेतु का निर्माण कार्य पूर्ण कर दिया, तब इस सेतु को 'नलसेतु' ही कहा गया।[5] राम ने अयोध्या प्रतिगमन के समय सीता को सेतु दिखाते हुए इसे 'नलसेतु' ही पुकारा था।[6] महाभारत में भी इसे नलसेतु ही कहा गया है।[7] महाकाव्य में अनेक स्थानों पर इस सेतु को 'सेतुपथ[8] तथा सेतुबन्ध'[9] कहा गया है किन्तु साथ ही 'नलपथ'[10] नाम भी दिया गया है। जिसे 'नलसेतु' का पर्याय मानना चाहिए। भावार्थ रामायण में भी इसे नलसेतु[11] ही कहा गया है। अरब यात्री अलबरूली ने इसे सेतुबन्ध कहा है।[12]

जबकि माधव कन्दली रामायण में इसे 'रामसेतु'[13] कहकर पुकारा गया है। कृष्णदेवराय के 1508 ई0 के हम्पी शिलालेख में भी एक स्थान पर रामसेती शब्द अंकित है। यह रामसेतु का ही सप्तमी विभक्ति का एक वचन है, जिसका अर्थ है– रामसेतु पर/ में[14] ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सर्वेयर जलरल जेम्स रैनल ने 1788 ई0 में भारत का एक राजनीतिक मानचित्र तैयार किया था। इस मानचित्र में भारतीय समुद्र तट तक स्थित 'रामनकोइल' और श्रीलंका के तट पर स्थित तलाई मन्नार को जोडने वाले सेतु को 'रामार ब्रिज' अंकित किया था। बाद में 1804 ई0 में इस मानचित्र की एक और प्रति तैयार की गई, जिसमें 'रामार ब्रिज के स्थान पर 'एडम्स ब्रिज' अंकित कर दिया गया।[15] सन् 1972 ई0 में प्रकाशित तमिलनाडु प्रदेश के रामनाथपुरम् जनपद के गजेटियर में इसे 'नलसेतु कहा गया है तथा साथ ही उसमें इसका एक नाम 'आदिसेतु' भी बताया गया है। तमिल मे इसे 'तिरूअनई' अर्थात पवित्र–बन्ध कहते हैं।[16] वर्तमान में यह 'सेतुबन्ध रामेश्वरम' तथा 'रामसेतु' के नाम से विख्यात है चूँकि श्रीलंकाई मुसलमान इसे अपनी मान्यता के अनुसार 'आदम का पुल' कहते थे। इसलिए अंग्रेजो ने उच्चारण की दृष्टि से सुविधाजनक समझकर इसका नाम एडम्स ब्रिज' कर दिया।

रामसेतु का वैज्ञानिक पक्ष

छिछला समुद्र

एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि अथाह समुद्र में सेतु का निर्माण किस प्रकार किया गया होगा, वह भी केवल वृक्षों एवं शिलाओं के द्वारा? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए प्राचीनकाल में समुद्रीय जल–स्तर की स्थिति को समझना होगा। माना जाता है कि पिछला हिमयुग लगभग 10,000 वर्ष पहले समाप्त हुआ था। इसके बाद जलवायु में उत्तरोत्तर ऊष्णता की वृद्धि हुई। जिसके फलस्वरूप बर्फ पिंघली और समुद्रीय जल–स्तर ऊपर उठा।

नैयर एवं हाशमी[17] का विचार है कि पश्चिमी कगार से छिछले पानी के स्रोत के रेडियोकार्बन– तिथि परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि लगभग 10,000 वर्ष पहले समुद्रीय जल–स्तर 90 से 100 मीटर नीचे था। इस सम्बन्ध में बी.बी. लाल का मत है कि यदि यूरोप में भू–संयोजनो के विलुप्त होने की अति–गम्भीर घटना हो सकती है, तो भारत के दक्षिणी छोर से श्रीलंका के उत्तरी छोर के मध्य भू–संयोजन के साथ घटित समान उल्लेखनीय घटना पर आश्चर्य क्यों होना चाहिए।[8]

यह भी उल्लेखनीय है कि विश्व के विभिन्न भागों मे तटीय स्थलों के पुरातात्विक उत्खनन से भी समुद्रीय जल–स्तर का चढाव पुष्ट होता है। उदाहरणार्थ पाण्डिचेरी के निकट एक प्राचीन बन्दरगाह 'अरिकमेडु' में 1945 में हुए उत्खनन मे इण्डो–रोमन का निचला भाग मिला, जो प्रथम–द्वितीय शताब्दी का था, अब समुद्रीय जल–स्तर से नीचे है।[9]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि हिमयुग के प्श्चात् विश्व की जलवायु में उत्तरोत्तर ऊष्णता की वृद्धि होने के फलस्वरूप विश्व के विभिन्न स्थानो में कई भू–संयोजन एवं समुद्र–तट जलमगन हो गये। कुछ हजार वर्षो पहले यही स्थान शुष्क रहे होगे अथवा यहाँ छिछला समुद्र रहा होगा। पूर्वकाल में भारत और लंका के बीच भी छिछला समुद्र ही रहा होगा। इसलिए छिछले समुद्र में सेतु का निर्माण किया जाना सरल रहा होगा। इस

सन्दर्भ मे बी.बी. लाल द्वारा तैयार किया गया स्कैन अललोकनीय है।[20]

मानव निर्मित संरचना

विशषज्ञों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि भारत और श्रीलंका के बीच समुद्र के नीचे स्थित सरंचना मानव निर्मित है।

हैदराबाद स्थित ''नेशनल रिमोट सेंसिंग एजेन्सी'' ने एक पुस्तक प्रकाशित की है–इमेजेज इण्डिया। इस पुस्तक में कहा गया है–''सेतु का मूल/हेतु एक रहस्य है। पुरातात्विक अध्ययन उद्घाटित करता है कि यह पुल प्राचीन युग का है, जोकि 17,50,000 वर्ष के लगभग का है।'' इस पुस्तक के स्टनिंग स्ट्रक्चर' उपशीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ 39 पर लिखा है– इसकी संरचना संकेत करती है कि यह मानव निर्मित हो सकता है।'' इसमें यह भी कहा गया है–'' यह 30 किलोमीटर लम्बा पुल, जिसका नाम 'एडम्स ब्रिज' हैं, बलुआ टीलों की एक श्रृंखला से बना है तथा दक्षिण भारत में रामेश्वरम् से श्रीलंका को जोडता है।''[21]

भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग के पूर्व निदेशक श्री बद्रीनारायण का मानना है कि रामसेतु प्राकृतिक संरचना नहीं है। श्री बद्रीनारायण के अनुसार राष्ट्रीय समुद्र तकनीकी संस्थान के सहयोग से रामेश्वर और अन्तर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र में पंक्तिबद्ध दस जगह खुदाई की गई थी। इन सभी जगह पर ऊपरी छः मीटर के हिस्से में समुद्री रेत, फिर कोरल्स, सैण्ड स्टोन और निर्माण में प्रयुक्त बडे पत्थर मिले। इसके बाद पाँच पाँच मीटर (गहराई) में बिखरी बालू और ठोस संरचना दिखाई दी। बालू के ऊपर मिले पत्थर इस प्रकार के थे, जो नदियों या मैदानों में मिलते हैं। श्री बद्रीनारायण के अनुसार वे पत्थर इस समुद्र निर्मित नहीं हैं। उन्हें यहाँ किसी प्रयोजन से डाला गया होगा।[22] यह प्रयोजन रामसेतु निर्माण के अतिरिक्त और क्या हो सकता है?

सेतु–निर्माण–कला

रामायण में एक और स्थान पर सेतु बनाने सम्बन्धी विवरण प्राप्त होता है। जब भरत ने राम को अयोध्या वापस लौटा लाने के लिए वन की और प्रस्थान किया। तब उन्होने शिल्पियों आदि को आदेश दिया कि वे आगे जाकर विषम वन–प्रदेश में सेना के लिए समतल मार्ग का निर्माण करें।[23] इन शिल्पियों में ऊँची–नीची एवम् सजल–निर्जल भूमि का ज्ञान रखने वाले, सूत्रकर्म में कुशल खुदाई करने वाले, निर्माता तथा नहरों और जल–प्रवाहों के निर्माण में प्रवीण आदि कई प्रकार के कारीगर थे।[24] उन्होनें मार्ग की बाधाओं, डालियों, झाड–झंखाड़ घास–पात, पेड–पौधों, कंकड–पत्थर आदि को टांकी और कुल्हाडी से साफ करते हुए मार्ग बनाना शुरू किया। अपने संगठित कार्य द्वारा उन्होने वृक्षहीन प्रदोशो में वृक्ष लगाये तथा अनावश्यक एवं अवरोधक पेडो और पोधो के झुरमुटों को काटकर साफ कर दिया। ऊँची–नीची भूमि समतल कर दी गई, कुएँ तथा गडढे मिटटी से भर दिये गये, चटटानों को काटा गया, जलीय स्थानों पर पुल बनाये गये, मिटटी को कूट–पीटकर बराबर कर दिया गया तथा जहाँ खोदने की आवश्यकता थी, वहाँ खनन–कार्य भी किया गया।[25] उस मार्ग को भारी यातायात के योग्य बनाया गया था, क्योंकि इस पर असंख्य वाहनों और पशुओ से युक्त भरत के साथ जाने वाली विशाल सेना का आवागमन होना था। उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि उस काल में सेतु का निर्माण करने की कला विकसित हो चुकी थी।

सेतु निर्माण के लिए वानर अलग–अलग कार्यो के लिए अलग–अलग दल बनाकर कार्य कर रहे थे। कुछ वानर वृक्षो को ला रहे थे, तो कुछ शिलाखण्डो तथा पर्वतो को तोड़कर उनके हिस्से ला रहे थे।[26] वे इस कार्य के लिए यन्त्रों का प्रयोग करते थे।[27] सेतु–निर्माण की प्रक्रिया में सबसे पहले समुद्र को वृक्षो से पाटा गया।[28] तब उनके ऊपर शिलाखण्ड रखे गये। कुछ वानर शिलाखण्डों आदि को एक सीध में रखने हेतु पकडे हुए थे।[29] तथा कुछ दण्डों द्वारा नापने का कार्य कर रहे थे।[30] कपितय वानर पुल बनाने के लिए रखे गये वृक्षों तथा शिलाओं को तृणो तथा काष्ठों से बाँध रहे थे। सम्भवतः ये तृण मजबूत लताओ के टुकड़े होंगे अथवा यहाँ वल्वज नामक 'तृण' से तात्पर्य होगा, जिससे रस्सी का निर्माण किया जाता है।[32] तथा काष्ठो से तात्पर्य लकड़ी से बनी कीलो से होगा। इस प्रकार वानरो द्वारा किया गया यह कार्य एक 'संगठित–कृत्य'था। जो वानारों के एक विशाल समूह ने राम की आज्ञा से नल के अभियांन्त्रिकी की निर्देशन में पूरा किया।

इस सम्बन्ध में एस.एन. व्यास का भी मत है कि भारत और लंका के बीच जिस नल–सेतु का निर्माण किया गया उससे वानर–शिल्पियों के निर्माण–कौश्ल एवं यन्त्र–चातुरी पर अच्छाा प्रकाश पड़ता है।[33] विश्वनाथ लिमये के मतानुसार रामेश्वर से लंका तक के पुल–निर्माण में वानरों द्वारा प्रकट अभियान्त्रिकी तथा यन्त्रों द्वारा विशालकाय वृक्ष तथा शिलाओं का वहन, नाप–यन्त्र का प्रयोग आदि सभी बाते उस काल की विकसित सभ्यता के सम्बन्ध में सभी को विचार करने के लिए बाध्य करती है।[34]

रामसेतु की माप

वाल्मीकि रामायण सहित अधिकांश रामकथा सम्बन्धी ग्रन्थों मे सेतु की लम्बाई 100 योजन तथा चौडाई 10 योजन बताई गई है। कई विद्वान 100 योजन की लम्बाई के कारण भ्रम में पडकर लंका की स्थिति की कल्पना कहीं और ही करने लगते है। ऐसा क्यों है? इसके लिए हमें प्राचीनकाल मे दूरी के लिए प्रयुक्त एक माप 'योजन' पर विचार करना होगा।

प्राचीनकाल मे दूरी को मापने के लिए अनेक प्रकार के माप प्रचलन में थे, जिनमें 'योजन' का प्रमुख स्थान था। इसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद[35] में मिलता है। इसके अतिरिक्त अथर्ववेद, मैत्रायणी संहिता तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी योजन का उल्लेख दूरी के एक माप के रूप में मिलता है।[36] किन्तु मैकडॉनल व कीथ के अनुसार इसकी ठीक–ठीक लम्बाई को व्यक्त करने वाला कोई सन्दर्भ वैदिक साहित्य मे नही मिलता।[37] योजन का उल्लेख पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी प्राप्त होता है।[38] किन्तु वहाँ भी इसकी लम्बाई को वयक्त करने वाला कोई सन्दर्भ नहीं मिलता है। योजन की लम्बाई को व्यक्त करने वाला प्रथम सन्दर्भ 'कौटिल्य अर्थषास्त्र' में प्राप्त होता है। इसके अनुसार दो सहस्र धनुष– प्रमाण का एक गोरूत और चार गोरूत का एक योजन माना जाता है। अर्थशास्त्र के ही अनुसार एक सौ आठ अंगुल का गार्हपत्य धनुष होता है, जिसका प्रयोग दूरी को मापने के लिए किया जाता है। इस प्रकार एक योजन आठ हजार धनुष का होता है। अंगुल की माप मध्यम आकार के पुरूष की मध्यमा अंगुली की मोटाई के समान होती है।[39] किन्तु ललित विस्तर' के अनुसार एक हजार धनुष का एक 'मार्गध्वजाकोश' होता है। चार क्रोश का एक योनज होता है।[40] यहाँ योजन की लम्बाई चार हजार धनुष की सिद्ध होती हैं यूनानी यात्री मेग्स्थनीज ने 'इंडिका' में लिखा है कि राज्य कर्मचारी सड़को के किनारे प्रत्येक दसवी स्टेडिया पर रास्ते तथा दूरी बताने वाले स्तम्भ बनवाते थे।[41] स्म्भवतः इन्ही स्तम्भों को मार्ग ध्वजा कहा जाता होगा तथा इनके बीच की दूरी, जो एक हजार धनुष होगी, 'मार्गध्वजाकोश' कहलाने लगी। सम्भवतः यही कालान्तर में छोटा कोस' कहलाया, जो पंजाब से लेकर बंगाल तक प्रचलन में था।

इस प्रकार यहाँ एक कोस की माप1000 धनुष अथवा 81,000 इंच या 6,750 फीट अथवा 2,250 गज अर्थात 1 मील 490 गज होती है। यहाँ एक योजन की माप 5 मील 200 गज होगी।

उपरोक्त सन्दर्भो से ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में योजन की अलग–अलग माप प्रचलित थी। वैसे तो रामायण में भी अनेक स्थानों पर दूरी के सन्दर्भ में 'योजन का उल्लेख हुआ है, किन्तु योजन की लम्बाई को व्यक्त करने वाला सन्दर्भ दो स्थानों पर ही प्राप्त होता हैं प्रथम तो तब, जब राम पिता दशरथ की आज्ञा से चौदह वर्ष के लिए वनवास हेतु जाते हैं, तो मार्ग में उन्हें प्रयाग में स्थित मुनि भारद्वाज का आश्रम मिलता है। राम मुनि भारद्वाज से ऐसे स्थान के विषय में जानना चाहता है, जहाँ आश्रम बनाकर निवास करना उपयुक्त हो। तब मुनि भारद्वाज राम से कहते हैं कि यहाँ से दस कोस दूर चित्रकूट नामक स्थान है। आप वहीं जाकर निवास करें।[42] इसके बाद जब राम का अनुज भरत राम को वापस अयोध्या लाने के लिए, उन्हें खोजता हुआ मुनि भारद्वाज के आश्रम पहुँचा तथा उनसे राम का पता पूछा तो मुनि भारद्वाज ने भरत से कहा कि यहाँ से ढाई योजन दूर चित्रकूट नामक स्थान में राम का निवास है।[43] मुनि भारद्वाज के उक्त दोनों कथनों से सिद्ध होता है कि एक योजन चार क्रोश के बराबर माना जाता था। किन्तु तत्कालीन क्रोश की लम्बाई के सम्बन्ध में कोई संकेत वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलता।

वाल्मीकि रामायण का दूसरा सन्दर्भ भी उल्लेखनीय है। जब रावण द्वारा सीता–हरण के पश्चात राम सीता को खोजते हुए सुग्रीव से मिलते हैं तथा सुग्रीव द्वारा सीता की खोज में सहायता का आश्वासन मिलने के बाद राम के द्वारा सुग्रीव को भी आश्वस्त किया जाता है। कि वह भी उसके दुष्ट भाई वालि का वध कर देंगे। तब सुग्रीव राम के बल की परीक्षा लेने के लिए कहता है कि एक बार वालि ने दुन्दुभि नामक राक्षस का वध कर उसके शव को दोनों हाथों से उठाकर एक योजन[44] दूर फेक दिया था। यदि राम उस राक्षस के अस्थि समूह का, जो कि अभी उसी स्थान पर पड़ा है, एक ही पैर से दो सौ धनुष[45] दूर फेंक सके तो मैं मान लूँगा कि इनके हाथों वालि का वध हो सकता है। इससे प्रतीत होता है कि एक योजन की दूरी तथा ये दोनों तुलनात्मक दूरी थी। अतः यह माना जाता है कि यहाँ वर्णित एक योजन की लम्बाई सम्भवतः उपरोक्त वर्णित गोरूत एवं क्रोश की लम्बाई से छोटी मानी गई है। उपरोक्त तथ्यों से प्रतीत होता है कि प्राचीनकाल में उत्तर भारत में योजन के दो माप प्रचलित थे– एक कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार चार गोरूत या आठ हजार धनुष वाला तथा दूसरा ललित विस्तर में वर्णित चार क्रोश या चार हजार धनुष वाला। किन्तु दक्षिण भारत में जो योजन प्रचलित था, उसकी लम्बाई उपरोक्त दोनों योजनो से कहीं कम थे।

इसी सन्दर्भ में यदि रामसेतु की लम्बाई को देखा जाये तो 100 योजन की माप 20,000 धनुष या 25 मील 1000 गज अथवा लगभग 41 किलोमीटर होती है जो सेतु की वर्तमान लम्बाई के अत्याधिक निकट है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि वर्तमान में रामसेतु का जो जलमग्न भाग है उसकी लम्बाई 18 मील अथवा लगभग 30 किलामीटर है। वाल्मीकि ने सेतू की जो लम्बाई बताई है वह रामेश्वरम् से ही प्रारम्भ हो जाती है। रामेश्वरम् से धनुष कोटि तक, जहाँ से सेतु का भाग जलमग्न हो जाता है लम्बाई लगभग 7 मील है तथा इसकी चौडाई भी जलमग्न सेतु की चौडाई के बराबर ही है। अतः इस लम्बाई को जोडने पर वाल्मीकि द्वारा बताई गई सेतु की लम्बाई की माप पूर्ण हो जाती है। तमिलनाडु प्रदेश के रामनाथपुरम जनपद के गजेटियर में इसकी लम्बाई 30 मील अंकित है।[46]

सेतु ही क्यों?–

राम ने वानर सेना को लंका पहुँचने हेतु समुद्र पार कराने के लिए सेतु निर्माण जैसा दुष्कर साधन नहीं क्यों चुना? यह प्रश्न भी कुछ लोगों को अचम्भित अवश्य करता होगा। इस कार्य के लिए बडे जलपोतों का उपयोग भी किया जा सकता था।

लेकिन इस प्रश्न का उत्तर भी वाल्मीकि रामायण में ही मिल जाता है। हनुमान जी के द्वारा राम के समक्ष लंका का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए यह बताया जाता है कि वहां जाने के लिए नाव का भी मार्ग नहीं है।[47]

इस सम्बन्ध में सी.वी.वैद्य का भी मत है कि सम्भवतः इसका कारण यह था कि एक छिछले और अशांत सागर में जलपोतो का प्रयोग नहीं किया जा सकता था और फिर सामने के तट से एक प्रबल शत्रु के प्रतिरोध का भी तो भय था।[48]

विविध ग्रन्थों में रामसेतु

सर विलियम जोंस द्वारा लिखित पुस्तक' डिसकोर्सेज डिल्विर्ड बिफार द एशियाटिक सोसायटी' में सीमाओं का वर्णन करते हुए 'रामसेतु' का उल्लेख किया गया है।[49] विलियम फोर्डायस मेवर की पुस्तक 'युनिवर्सल हिस्ट्री एंशिएन्ट एण्ड मॉर्डन' में भी 'रामसेतु' का उल्लेख मिलता है।[50] द क्लासिक जर्नल में 'रामसेतु' का वर्णन इस प्रकार मिलता है– कहा जाता है कि वानरों के राजा हनुमान ने शिलाओं से समुद्र पर पुल बनाया। हिन्दु कहते है कि उसके अवशेष अभी भी विद्यमान है। जिसे 'आदम का पुल' या 'रामसेतु' कहते है।[51] आरनोल्ड हर्मन द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिकल रिसर्चेज इन टू द पॉलिटिक्स, इन्टरकोर्स एण्ड ट्रेड ऑफ द प्रिंसिपल नेशंस आफॅ एन्टिक्विटी में सीमाओं का उल्लेख करते हुए वर्णन आता है–'गंगा के उद्गम से लंका के राम पुल जो रामायण में प्रसिद्ध है।[52] विलियम येट्स द्वारा संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा के शब्द कोश 'ए डिक्शनरी ऑफ संस्कृत एण्ड इंग्लिश में 'समुद्रारू' या 'समुद्रारः' का अर्थ 'रामाब्रिज' दिया गया है।[53] ए. कैटलॉग ऑफ द मैमेलियन इन द म्युजियम ऑफ द ऑन ईस्ट इण्डिया कम्पनी, ईस्ट इण्डिया कम्पनी मयुजियम' में भी भारत के विस्तार के सन्दर्भ में 'रामसेतु' का उल्लेख हुआ है।[54] कार्लोट स्पियर मैनिंग और जार्ज स्कार्फ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'लाइफ एन एनशिएंट इण्डिया में 'रामसेतु' का उल्लेख इस प्रकार मिलता है। राम और सहयोगी सेनाओ ने कारोमण्डल समुद्रतट की ओर प्रस्थान किया और शीघ्रता से लंका जाने के लिए समुद्र में शिलाओं से पुल बनाया। उसके अवशेष आज भी दिखाई देते है।[55]

निष्कर्ष

इससे स्पष्ट होता है कि सेतु निर्माण का कारण छिछला समुद्र, पर्याप्त नावों का अभाव, शत्रु के प्रबल विरोध का भय, व्यापारियों के जलपोतो का ना लेना आदि रहा होगा। इसलिए उस समय सेतु ही उपयुक्त साधन था। उपरोक्त तथ्य सेतु की प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रतीत होते हैं। साथ ही यह निष्कर्ष भी निकलता है कि तत्कालीन परिस्थितियों में सेतु का निर्माण किया जाना एक कठिन और श्रमसाध्य कार्य तो अवश्य था, किन्तु असम्भव नहीं था।

सन्दर्भ

1. वी.एस. आप्टे संस्कृत –हिन्दी कोश, पृ0 1124
2. ऋग्वेद, 9/73/4
3. ऋग्वेद, 8/67/8
4. अथर्ववेद, 5/6/3

5. वाल्मीकि रामायण 6/22/76
6. वाल्मीकि रामायण 6/123/16
7. महाभारत 283/45
8. सेतुबन्धम् 8/52/53, 56, 74, 76, 81, 83, 85, 86, 88, 97, 100, 107
9. सेतुबन्धम् 8/59, 63, 64, 71, 72, 91
10. सेतुबन्धम् 8/47, 57, 70, 73, 92, 99
11. भावार्थ रामायण, अध्याय 41
12. अलबरूनीज इण्डिया पृ0 209
13. माधव कन्दली पृ0 602
14. हम्पी शिलालेख, दक्षिणमुख, पंक्ति 32, इपिग्रफिया इण्डिका, भाग–1 पृ0 364
15. श्रीराम सेतु रक्षा आन्दोलन (बुकलेट), पृ0 24 से साभार उद्धृत
16. तमिलनाडु प्रदेश के रामनाथपुरम् जनपद का गजेटियर– 1972, पृ0 308–309
17. मैरीन आर्कियोलॉजी ऑफ इण्डियन ऑसीन कन्ट्रीज, पृ0 83–86
18. बी.बी.लाल, पूर्वोक्त, पृ0 77–78
19. एनिशएन्ट इण्डिया, 1946, संख्या–2, चित्र–2, पृ0 23
20. बी.बी. लाल, पूर्वोक्त, पृ0 76, चित्र 3.6
21. हिन्दुस्तान टाइम्स 09.12.2007, डेली पॉयोनियर 09.12.2007, दैनिक जागरण 09.12.2007
22. बलवीर पुंज, प्रामाणिकता का निरर्थक प्रश्न, दैनिक जागरण, 18.09.2007
23. वाल्मीकि रामायण 2/79/13
24. वाल्मीकि रामायण 2/80/1–3
25. वाल्मीकि रामायण 2/80/6–10
26. वाल्मीकि रामायण 6/22/55
27. वाल्मीकि रामायण 6/22/60
28. वाल्मीकि रामायण 6/22/56–57
29. वाल्मीकि रामायण 6/22/ 62
30. वाल्मीकि रामायण 6/22/65
31. वाल्मीकि रामायण 6/22/66
32. प्रभुदयाल अग्निहोत्री, पंतजलिकालीन भारत, पृ0 284
33. एस. एन. व्यास, रामायण कालीन समाज पृ0 245
34. थ्वष्वनाथ लिमये, वाल्मीकि के ऐतिहासिक राम, पृ0 383
35. ऋग्वेद, 1/123/8, 2/16/3, 10/78/7, 10/86/20
36. अथर्ववेद 4/26/1, मैत्रायणी संहिता, 2/9/9, 3/8/4, तैतिरीय ब्राह्मण 2/4/2/7
37. मेकडॉनल व कीथ, वैदिक इण्डेक्स, भाग–2, पृ0 218
38. योजनं गच्छति 5/1/74
39. अर्थशास्त्र 2/20
40. ललित विस्तर अनुवादक– शान्तिभिक्षु शास्त्री, पृ0 288, पाद–टिप्पणी–9 भी देखे
41. योगेन्द्रनाथ मिश्र, मेगस्थनीज का भारतवर्षीय वर्णन, पृ0 49–50
42. वाल्मीकि रामायण 2/54/28
43. वाल्मीकि रामायण 2/92/10
44. वाल्मीकि रामायण 4/11/47
45. वाल्मीकि रामायण 4/11/72
46. तमिलनाडु प्रदेश, रामनाथपुरम् जनपद का गजेटियर– 1972, पृ0 309
47. वाल्मीकि रामायण 6/3/21
48. सी.वी. वैद्य दि रिडिल आफॅ द रामायण, पृ0 131
49. सर विलियम जोन्स, डिसकोसज डिलिवर्ड बिफार द एशियाटिक सोसायटी पृ029
50. विलियम फोर्डायस मेवर, युनिवर्सल हिस्ट्री, एनशिएन्ट एण्ड मॉर्डन पृ0 216
51. द क्लासिक जर्नल भाग–31, सीएल.जेएल. न0 62 पृ0 26
52. आरनोल्ड हरमन, हिस्टोरिकल रिसर्चज इनटू द पॉलिटिक्स, इण्टरकोर्स एण्ड ट्रेड आफ द प्रिन्सिपल नेशनन्स आफ एन्टिक्वटी पृ0 89
53. विलियम येटस् ए डिक्शनरी ऑफ संस्कृत एण्ड इंग्लिश, पृ0 821
54. ए कैटलॉग ऑफ द मैमेलियन इन द म्युजियम ऑफ द ऑन, ईस्ट इण्डिया कम्पनी, ईस्ट इण्डिया कम्पनी म्युजियम
55. कार्लोट स्पियर मैनिंग एवं जॉर्ज स्कार्फ, लाइफ इन एनशिएंट इण्डिया पृ0 117